भक्तभवतारणी प्रारब्धः १००४४००४४

1

CC-0. Lal bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

श्रीगणेशायनमः ॥ अथ भक्तवत्सलावली लिख्यते ॥ चौपाई ॥ अथ भक्तिवत्सलतननस
बडाई ॥ जनकेदुःखनिवारहुभाई ॥ जनकेदुःखविश्रामदुःखपावै ॥ यांभाहोइसो
जारद्धपावै ॥ जनकेदुःखपरमेश्वरदौरत ॥ सोतीनिलोकमहजा
ना ॥ हरिकेप्राणबसहिजनमाही ॥ जनउपदेसदियेबनजाही ॥ जोजन ॥१॥
परैभक्तकोगाढा ॥ मानहरामचन्द्रकाढिकेकाढा ॥ जसवालकपालैमहतारी
॥ तैसैरक्षाकरैमुरारी ॥ तमनामप्रह्लादपुकारा ॥ पितैबांधिपर्वतडारा ॥ तातेवज्र
लगैनपाई ॥ उपरहितासिनीकरवारा ॥ तबलैअसुरखम्भमहवाधा ॥ काढेख
उकुलाप्रेकाधा ॥ नरसिंहरूपनवधराम्रारी ॥ मारअसुरमिटादुःखभारी ॥ दोहा ॥
खम्भमहसोनिकसिकैहरनाकुमकी

CC-0. Kanchi Kamkoti Chandrasekharendra Saraswati Vishwa Vidyalaya Deemed University, Kanchipuram. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

यजि कह कुलार्द्धक कहीन्हा ॥ आधे पग कहु पीछन पाई ॥ रिन्हि चहु तगो पि देराई ॥
तब हरिकहा मागु वनिराजा ॥ तबवनि वेपुरवहु हमरे काजा ॥ तबवनि कहीं अतु
लहु की जे ॥ तबराम मेहि पासन दीजे ॥ ए सरामवचन केगाढ़े ॥ अजहु बलि
नि के द्वारे ठाढ़े ॥ अध्वरीक पदप्रथ्वीतपावै ॥ नितउठिकथारामकी चालै ॥
ताको व्रतअविपानअपि ॥ आदर कोजावै नपे ॥ तबवामिकहालानक
रिआवौ ॥ तबहिंतुम्हरोभोजनपावै ॥ तरपनकारनिअपारलगाई ॥ सभै
किंपेरनपहुचेआई ॥ तबराजोकुसंत्रजोकीहा ॥ जाकुंडको चरणोदकलीन्ह
पेहा ॥ पुरवासानहि अरुपोषहुनै की हुअवारा ॥ चौपाई ॥ एजहिएककी
लिंगोलाई ॥ शत्रुतोरपहुकत्तहैराई ॥ तबहिरामजोकीन्ह उपाई ॥ चक्रस
दर्शनदीन्हपठाई ॥ चक्रकरगा ॥ लागलागा ॥ तबहिंअवनजीवनै भागा ॥

॥२॥ ॥२॥

CC-0. Dalhousie Jyotish University Delhi. Digitized by Siddhanta eGangotri Gyaan

मारि॥ पुरपरानिजवनक्को धनमहलेतउवारि॥चौपाई॥पितासोबुद्धिनपस्याकी
ठा॥पदवीअचलसोधुवकहीन्हा॥आयनहोरेवालिकेधोरे॥दीनवचनप्रभु
आरपुकारे॥मांगुमांगुराजावलियोला॥मनाकीकहुवचनन्योला॥साढे
तीनिपैंगभरमांगी॥मैमंदरहोवैवैरागी॥पालजतीमैधनमहाहठहत
कीकेदरसनचहउ॥जयरामनाअविचारनलाउ॥तवबलिहसिमोकप्रभुरा
राजाकहैलपुछिपाठे॥नागहआपनिसकनिकेभाठे॥देतेहनोहिआकाजधानी
नाचिलेहउभरसांगपानी॥मैकाकरहकरमकरही॥जाकहकपारामनहि
की॥पाढिकसतवजागिअकाशा॥चक्रितभयोबालेदेखितमासा॥दोहा
तीनिलोककंपितभयोदेखिवटुकी पाढिकहाकिप्रभुकहतहैतुम्हारागा
तीनिलोकहकतीनिडगधरकी॥

CC-0. Panini Kanya Maha Vidyalaya Collection. Jangamwadi Math Collection. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

मोर मुकुट मोरे कुंडल राजा। तिन कर कीरति करै समाजा॥ बर बैठे हरि प्रभु
सनदीन्हा॥ आधा आसन गिरि लीन्हा॥ श्री राधा को पान मगावा।
बेरा जाके साथ पावा॥ मान दान जास पुराना॥ सो धुसा धुना राप
ना भाखा॥ मान पत्र मोरि प्रभु कंठ लगाई। दै प्रसीद राजा कहलाई॥
सुत गोपाल साकरे साखी॥ मन ते जाइ छुटा पछताखी॥ दान का
दिक सब बहु बर दीना। चौथे पनकह की हुपवीना॥ दोहा॥ की हुनप
सुता जाइ उन सिंह भए सकाजा। जिन हिं मन पद दी न्हे ऐसे हैं बरा
जा॥ केवल के बल्ला हुकरासा॥ इन हुकी प्रभु पर अति आसा॥ दत्ता त्रेय ऋषि
शंकर जोगी॥ वे तो हरि के बड़े वियोगी॥ विश्वनाथ के नहु के राजे॥ कलि कवि
मन हरि पद नहीं माजे॥ नारद व्यास और सुक देवा॥ उन हुकी हू प्रभु की सेवा॥

CC-0. Lal bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

तीनिलोकपति रिद्धि पठाई॥ काहु नराख ऋषि ध्यान न ई॥ तब ऋषिगए
कश्यके पाश॥ तासु शरण ये वेदव्यासा॥ उत्तर दिशा हरि जन्म कहीन्हा॥
भक्तन्ह के हतु यह कीन्ह कृपानिधि ऋषि रूप के धारे वई चुक के-
दुष्ट घनिहारे॥ तब ऋषि मनमह चिन्त जाई॥ तुरत गए जाके नई॥
चक्रसुदर्शन सो तब कीन्हा॥ हरषि रिषन तब आशिष दीन्हा पांचौ पंडो
जन उबारे॥ धारन घाके हरिष धारे॥ तब दुरजो धन कहा रिसाई॥
द्रौपदी नग्न करन हतु मजाई॥ दोहा॥ तब हि दुःशासन जाइ कैपकरो ची
रहनाई॥ सभा राज के पी चमो बे चैहि लागरि साई॥ चौपाई॥ सुमिरन
कीन्ह द्रौपदी राजी॥ प्रगट भये प्रभु अंतरजामी॥ श्रीभगवान
तानो हो लाज के धरयो दुशासन पानी॥

CC-0. Lal bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

सोहरि कहे होइहै ॥ कोवकिरातनिम्लवनबासी ॥ रामनामलगिहोइउदासी ॥ देव
पितरकोइकामनआवै ॥ तेहिपुजैपशुयज्ञकरावै ॥ देजहरीपातिहो बधिपाने ॥
तवजानिकुरुक्षेत्रतेराने अपरोक्षरामकेआपा ॥ पासमबुकयहतथुपा
या ॥ दोहा ॥ श्रीकृष्णजन्मखण्डीरामकीपदैसुनैजोकोइ ॥ तवभक्तनकीकृपातेभ
क्तपदाहतहोइ ॥ ८ ॥ इतिश्रीकृष्णजन्मखण्डीतपुराणेशुभसत्संवादेभुषुण्डि ॥ पुरोपो ॥ ॥ ७ ॥
वाशैवीकामजेदोऽस्वयंभैं ॥ शक्तोरकस्तथापीतेदानींकृष्णतांगतः ॥ १ ॥
शुक्लोवर्णःसत्यजुगेसतीव्रजसाकृतः ॥ त्रेतायांरक्तवर्णोऽयंद्वापरेवि
ष्णुः ॥ २ ॥ कृष्णःकलौश्रीमांस्तेजसांराशिरेवच ॥ परिपूर्णतमंब्रह्मतेनब्रह्म
इतिस्मृतः ॥ ३ ॥ ४४१ १८४११ ७१३३४७८
डम्बकसिद्धेविश्रीदत्तात्रेयंप्रतिपदापांडवपरिक्षितीय
श्रीभगवतेसुभलक्ष्मभंभूपा सम्पूर्ण १२८८

CC-0. Lal bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by Sarvagya Sharada Peetham

इन हिलाजि वहुतेंहि तकीन्हा॥ दुष्टनकेंहि कहुत्रासदीन्हा॥
सालजामरैदासचोलाये॥ विलँबनकीन्हीदौरेआये॥ रंका
वंकाससधनकसाई॥ तिनहुकीप्रभुभनीधनाई॥ रामदासश्रीत्रिभुज
स्वामीके॥ उहारकेअंतरजामी॥ तेनिजुपदेसदनकीन्हा॥ राजैतीऋव
हतंकछुदीन्हा॥ कीपाजुकीरहनिअपारा॥ भक्तकीकथाकीधारा॥ दोहा॥
पुरुनदेवहितकामधुज भक्तकीकथाहिआजेभत्र श्रीधरदासकेकाजकि
येउहुधाइ॥ चौपाई॥ धनाजाटकोखेतजमाया॥ पीजहुतासोसतनघाया॥
साधवदासनजानेभाई॥ जगन्नाथतकलातवीडजाई॥ परमेश्वरकहभोग
पिन्हाई॥ वोकुलकरतासोईआधिकारी॥ जातिपातिपूछनाहिकाई॥ हरिकहजे

CC-0. Lal Bahadur Shastri University, Delhi. Digitized by eGangotri Sarayu Trust. Funding by MoE-IKS